चन्दामाम
6

एक जङ्गल में एक बड़ा सरोवर था। एक दिन वानरों का राजा वाली उस सरोवर के बगल से जा रहा था। शाम का वक्त था। भक्तों की देव पूजा का समय आसन्न हो गया था।

वाली शिवजी का बड़ा भक्त था। वह हमेशा अपने साथ एक सुन्दर पेटी में बन्द करके एक शिवलिङ्ग लिए फिरता था। इसलिए वह उस सरोवर में नहा-धोकर एक जगह झाड़-बुहार कर वहाँ लिङ्ग की पूजा करने लगा। उसी समय उस जङ्गल के रहनेवाले कुछ भील शिकार खेलते हुए उधर से आ निकले। वे वाली को पूजा करते देखकर वहीं खड़े हो गए और तमाशा देखने लगे। उसके बाद उन्होंने वाली की देखादेखी अपने हथियार वगैरह एक जगह डाल दिए और नजदीक आकर बड़ी भक्ति से शिवलिङ्ग को प्रणाम किया।

उस सुन्दर शिवलिङ्ग को देखकर उनमें भी भक्ति पैदा हो गई और उन्होंने सोचा -"काश ! हमारे पास भी एक ऐसा शिवलिङ्ग होता। तब हम भी रोज इसी तरह उसकी पूजा करते न !" इतने में वाली की पूजा खत्म हो गई। उसने शिवलिङ्ग को झाड़-पौंछ कर पेटी में रखने के लिए पूजा की सामग्रियाँ हटानी शुरू कर दी। भील लोग भी वहाँ से जाने लगे। इतने में एक विचित्र घटना घटी। भीलों के मरे हुए हिरण सब के सब फिर से जी उठे और देखते ही देखते चौकड़ी भरने लगे। पहले तो भील अचरज के मारे सन्न रह गए। लेकिन जब उन्होंने देखा कि मरे हुए हिरण उठकर भाग रहे हैं, तो उन्होंने झट तरकश से तीर निकले। लेकिन तीर हाथ में लेने पर उनका अचरज और भी बढ़ गया। उन्होंने देखा कि उनके लोहे के तीर सोने के बन गए हैं।

उषा रानी

इस अचरज में पड़कर वे मृगों की बात ही भूल गए और इतने में वे आँखों से ओझल हो गए। भील लोग सोने के तीरों कीऔर टकटकी लगाए देखते ही रह गए।

तब वाली ने उनसे कहा कि यह सब शिवलिङ्ग का प्रभाव है। यह सुनकर भील तुरन्त वाली के पैरों पर गिर पड़े और गिड़गिड़ा कर कहने लगे - "आप यह शिवलिङ्ग हमें दे दीजिए जिससे हम रोज पूजा कर सकें।" तब वाली खिलखिलाकर हँस पड़ा - "जाओ ! जाओ ! तुम लोग जङ्गली हो। पूजा करना क्या जानते हो?" उसने कहा। तब भीलों ने जवाब दिया -"आप इस तरह हमारा तिरस्कार न करें। हम भी भगवान के भक्त हैं।" फिर वाली ठठा कर हँसा -"जाओ ! जाओ ! आए हो बड़े भक्त बनने। मेरी बराबरी करना चाहते हो? आए हो हाथी से टक्कर लेने। जाओ, और कहीं ढूँढो अपना देवता। मैं अपना शिवलिङ्ग तुमको छूने भी नहीं दे सकता।" उसने साफ-साफ कह दिया।

और कोई होता तो भीलों से इस तरह की बातें करके जान बचा न पता। लेकिन वाली स्वयं बड़ा शक्तिशाली था। इसलिए भील लोगों को मन मार कर वहाँ से जाना पड़ा। वह शिवलिङ्ग उनकी आँखों में गड़ गया था। इसलिए वह पीछे मुड़ मुड़ कर उसकी और देखे जा रहे थे।
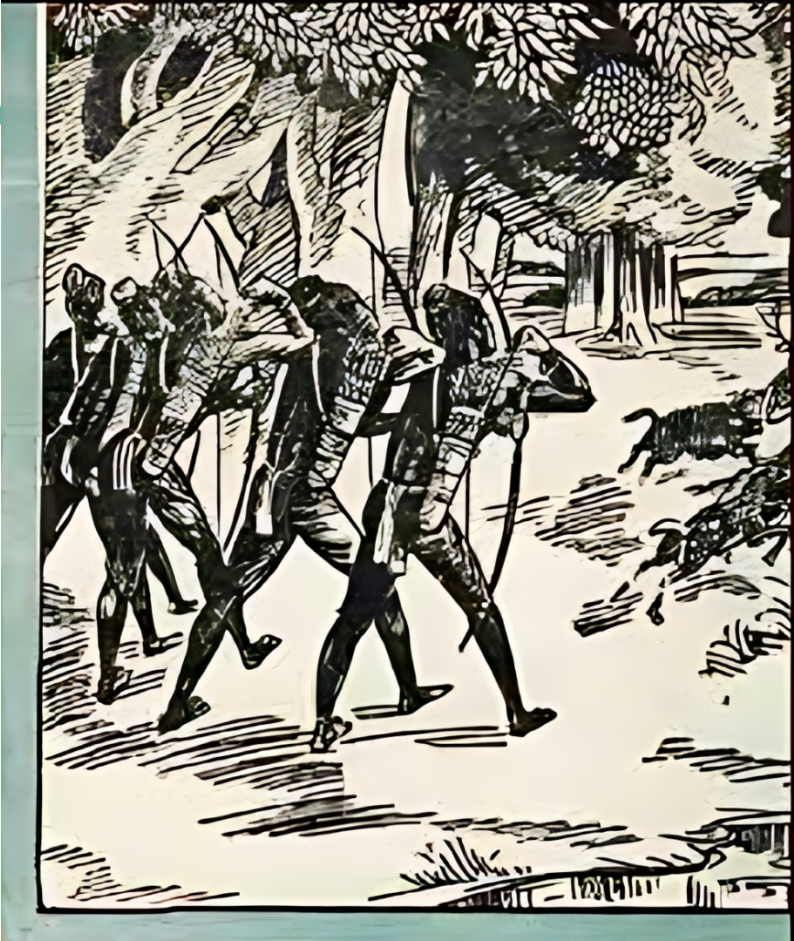
उनके चले जाने के बाद वाली ने शिवलिङ्ग उठाकर पेटी में रखना चाहा तो मालूम हुआ कि वह जमीन में गड़ गया है। उसे बड़ा आचार्य हुआ। उसने सोचा -"अभी तो मैंने इसे यहाँ से उठाया था। इतने में यह जमीन में कैसे गड़ गया ?" उसने फिर जोर लगाया। किन्तु लिङ्ग टस से मस न हुआ। तब

उसने अपनी पूँछ उससे लपेटकर सारी ताकत लगाकर लिङ्ग को उखाड़ना चाहा। लेकिन कोई फल न हुआ। तब वाली के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उसकी ताकत ऐसी थी कि बड़े से बड़े पहाड़ को भी वह उखाड़ कर फेंक दे सकता था। लेकिन आज उसे न जाने क्या हो गया था कि एक छोटे से लिङ्ग को जमीन से उठा न सका। उसने सोचा कि जरूर महादेव को किसी न किसी कारण से उस पर क्रोध आ गया है। इसलिए वह अपना गुस्सा इस तरह जाता रहे हैं। यह सोचकर वह बहुत व्याकुल हो गया। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। उसने हाथ जोड़कर शिवलिङ्ग से कहा - "स्वामी! क्या मुझसे कोई चूक हो गई है? अगर अनजाने में हुई हो, तो क्या आप मुझे क्षमा नहीं कर सकते? यहाँ बैठे रहने से कम कैसे चलेगा ! चलिए न अपने घर चलें। वहाँ बन्दर सभी हमारी राह देख रहे होंगे। चलिए न चलें।" वह बहुत गिड़गिड़ाया।

तब भगवान महादेव ने प्रत्यक्ष होकर कहा -"वाली ! मैं यहीं रह जाना चाहता हूँ। बगल में एक सरोवर भी है। भक्तों की यहाँ मेरे दर्शन करने में बड़ी सुविधा होगी। इसलिए अब मैं यहाँ से कहीं न जाऊँगा।" तब वाली को अपना अपराध मालूम हो गया। उसने सोचा -"मैंने अपने आप को भीलों से बड़ा भक्त मान लिया था और घमण्ड से कहा था कि जाओ, मैं ये लिङ्ग तुम्हें नहीं दे सकता। इसलिए भगवान मुझे यह पाठ पढ़ना चाहते हैं कि उनकी नजर में सभी बराबर हैं। वे सिर्फ मेरे ही नहीं, सभी के भगवान हैं।" उसकी समझ में सब कुछ आ गया। उसने फिर

गिड़गिड़ा कर शिवजी से कहा - "भगवन ! मैंने तुम्हारे भक्तों का जो अपमान किया था, उसके लिए तुम मुझे क्षमा करो। मैं तुमसे बिछड़ कर एक पल भी नहीं जी सकता। इसलिए तुम्हें मुझ पर तरस खा कर मेरे साथ आना ही पड़ेगा।" लेकिन उसकी बातें पूरी भी न हुई थी कि भगवान अन्तर्धान हो गए।

तब वाली लाचार होकर वहीं खड़ा रहा। वह उस शिवलिङ्ग को छोड़कर नहीं जा सकता था । लेकिन उसको ले जाना भी उसकी ताकत के बाहर था। इतने में उसे एक अच्छा उपाय सूझ गया। उसने सोचा -"शिवजी को यह जगह पसन्द आने का प्रधान कारण यह सरोवर है। अगर मैं किसी तरह इसे पाट दूँ तो फिर इस जगह से शिवजी को इतना मोह न रहेगा और वह मेरे साथ आने को तैयार हो जाएँगे।"

यह सोचकर उसने अपने चारों ओर नजर फेरी कि कोई पहाड़ वगैरह दिखाई दे तो उससे उस सरोवर को पाट दे। लेकिन नजदीक में कोई पहाड़ न था। तब बाली सौ योजन तक गगन मार्ग से जाकर एक भारी पहाड उखाड़ लाया और उसे उस सरोवर में डाल दिया।

लेकिन वाली ने जो सोचा था ठीक उसके विपरीत हुआ। उस पहाड़ के गिरने से सरोवर तो पटा नहीं, लेकिन उसमें से जल उछलकर एक उमड़ती हुई नदी के रूप में बहने लगा।

उस नदी को देखकर वाली को अपनी लाचारी पर गुस्सा भी आया और दुख भी हुआ। उसने शोकावेश में आकर कहा -" भगवान ! अगर तुम मेरे साथ न जाओगे

तो मैं यहीं अपना सर पटक पटक कर मर जाऊँगा।"

तब महादेव को उस पर दया आ गई और उन्होंने फिर प्रत्यक्ष होकर कहा -"अरे पागल !तुमने सोचा कि इस सरोवर को पाट देने से मैं तुम्हारे साथ चला आऊँगा। लेकिन देखो ! तुमने सोचा क्या और किया क्या ! तुमने सरोवर को पाट देने के बदले एक पवित्र नदी बहाकर भक्तों का उपकार किया है। इस तरह तुमने मुझे आनन्द दिया है। इसके अलावा तुम्हारा काम मुझे एक और कारण से बहुत पसन्द आया। तुम जानते ही हो कि मुझे पहाड़ से कितना प्रेम है। इसी से मैं कैलाश पर रहा करता हूँ। मैं अभी सोच रहा था कि अगर यहाँ एक पहाड़ भी होता तो कितना अच्छा होता ! तुमने यह कमी भी पूरी कर दी। तुम चाहते क्या हो ? यही न कि मैं तुम्हारे साथ रहूँ ? अच्छा ! अब मैं लिङ्ग रूप में तुम्हारी पेटी में बन्द होने के बजाय स्वयं तुम्हारा ह्रदय में अपना निवास बना लूँगा। अन्य भक्तों के लिए इस लिङ्ग को यहीं रहने दो।" यह कहकर महादेव ने वाली के ह्रदय में प्रवेश किया।

वाली ने जब आँखें मूँद ली, तो ऐसा मालूम हुआ कि शिवजी एक ज्योति के रूप में उसके ह्रदय में प्रकाशित हो रहे हैं। वह आनन्द से भरकर भगवान का ध्यान करते हुए घर चला गया। दूसरे दिन भीलों ने वहाँ जाकर देखा तो वहाँ शिवलिङ्ग तो था ही, साथ ही एक पहाड़ खड़ा था और एक नदी भी बह रही थी। उस दिन से वे भी शिवजी की पूजा करते हुए पाप विमुक्त हो गए।

इस तरह भगवान शिव ने वाली और भीलों दोनों को सन्तोष दिया।

थोड़ी ही देर में सारे श्रीनगर में यह बात फैल गई कि रानी नागवती को भुतहा फकीर हर ले गया है। पालने में लेटे हुए बच्चे को देखकर नागवती की बहनों ने रोते हुए कहा - "हाय ! बेटा ! तू कितना अभागा है। तेरे पैदा होने के पहले ही तेरे पिताओं को लड़ाई में जाना पड़ा। तेरे पैदा होते ही तेरी माँ को फकीर हर ले गया।

श्रीनगर में जितने जवाँ-मर्द बहादुर थे, सब शरमा गए कि फकीर उनके रहते क़िला में प्रवेश करके नागवती को हर ले गया। उन सबने एक जगह पञ्चायत करके तय किया कि सातों राजाओं को यह खबर भेजी जाए। लेकिन कैसे ? हरकारों को भेजने से तो उन्हें जङ्गल और पहाड़ों को पार कर वहाँ तक पहुँचने में बहुत दिन लग जाएँगे। इसलिए उन्होंने बाज़ों के द्वारा खबर भेजने की ठहराई। उन्होंने कई पत्र लिखे कि -"आपका एक लड़का हुआ है। लेकिन नागवती को फकीर हर ले गया है। बच्चा कुशल से है और उसे दाइयाँ पाल रही हैं।" फिर उन्होंने उन पत्रों को मोड़कर मजबूत धागों से बाज़ों के गले में बाँध दिया और उन्हें गाँव के बाहर ले जाकर उड़ा दिया। तीसरा पहर होते-होते बाज़ उड़कर रामपुर में राजाओं के खेमों पर जा बैठे।

जब सातों भाइयों ने पत्र खोलकर पढ़े तो उनके क्रोध का ठिकाना न रहा। उनकी तलवारें अपने आप म्यानों से निकल गई। उनके साथ बारह हज़ार सेनाएँ थी। दो सौ तोपें थी। जैसे राम ने रावण को मारकर सीता का उद्धार किया था, उसी तरह उन्होंने

तुरन्त फकीर के किले पर चढ़ाई करके, उसे मारकर नागवती को छुड़ाने की तैयारी की। तुरन्त शंख और शृङ्ग की ध्वनि होने लगी। कूच का डङ्का बज उठा। बड़ी धूमधाम से सारी सेना वहाँ से चली। बाघनगर और गङ्गानगर से होते हुए चौथे दिन तक सारी सेना नगवाडीह पहुँची। तुरन्त फकीर के किले के चारों ओर घेरा डाल दिया गया। पहर दिन चढ़ते चढ़ते तोपों ने किले पर तीन बार आग उगली। लेकिन एक गोला भी न दीवारों से लगा और न दीवारों के पार किले में ही पड़ा। सारे गोले राह में चूर-चूर होकर नीचे गिर गए। दीवार पर जरा सा धब्बा भी न लगा। यह सब फकीर के जादू की करामात थी।

इतनी बार तोपें दागने पर भी जब किले की दीवारों पर कोई आदमी न दिखाई पड़े, तो सिपाहियों को शक हुआ कि शायद किले में कोई नहीं है। तब उन्होंने दीवारों से सीढ़ियाँ लगाकर कुछ सिपाहियों को ऊपर चढ़ा दिया। जब उन सिपाहियों ने नीचे झाँक कर देखा तो उन्हें किले में एक भी मर्द न

दिखाई दिया। फकीर द्वारा हर लाई हुई औरतें जहाँ-तहाँ घूम रही थी। आखिर उन्हें मस्जिद के बाहर ठण्डी हवा में खाट पर पड़ा सोता हुआ फकीर दिखाई दिया। उसे देखते ही सिपाहियों ने नीचे इशारा किया और तुरन्त तोप किले की दीवारों पर चढ़ाई गई।

इतने में प्यारी भाई ने जब किले की दीवारों पर सिपाहियों को देखा, तो उसने फकीर को थपथपाकर जगाना चाहा। उसने कहा -"उठो फकीर ! जागो ! जागो ! किले पर दुश्मन चढ़ आए हैं। तुम्हारा सर्वनाश करना चाहते हैं। उठो ! उठो !" लेकिन फकीर न जगा। तब प्यारी अन्दर गई और कलछुल तपा कर ले आई। उसने फकीर को उससे दाग दिया। फिर भी फकीर खर्राटे लेता ही रहा।

तोपें फिर गरज उठी। इस बार फकीर पर निशाना लगाया गया। लेकिन फकीर को ऐसा लगा जैसे खटमल काट खा रहे हो। वह आँखें मलते हुए उठा। दीवारों पर सिपाहियों को देखते ही उसने समझ लिया कि दुश्मन आ गए हैं और तुरन्त नागवती को साथ

लेकर मस्जिद की छत पर चढ़ा। नागवती ने जब अपने पति और उसकी सेना को देखा तो वह आँसू बहने लगी। यह देखकर फकीर ने कहा -"पगली ! रोती क्यों है ? ये हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। तुम डरो नहीं। देखो, अभी मेरी करामात।" यह कहकर उसने एक जादू की लाठी निकाली और कुछ मन्त्र पढ़कर उसे दुश्मनों की और उड़ा दिया। लाठी उड़ी और शत्रु दल के सिपाहियों के ऊपर बेभाव की पड़ी। तड़ातड़ की मार से घबराकर सिपाही भागने लगे। वह लाठी यों तीन सौ दुश्मनों को मार कर फकीर के पास लौट आई। "अच्छा ! अब हम खुद लड़ने जाते हैं।" यह कहकर फकीर ने कमरबन्द कसकर हाथ में एक सोटा लिया और मुट्ठी पर भभूत हाथ में लेकर "या खुदा ! या खुदा !" कहते हुए शत्रु सेना पर टूट पड़ा। पास पहुँचते ही सिपाहियों ने उसे घेर कर टुकड़े-टुकड़े कर डाला। लेकिन यह क्या ? वह तो वहाँ खड़ा हुआ है। वहाँ भी मार डाला गया तो दूसरी और खड़ा दीख पड़ा। इस तरह न जाने वह कितनी बार मर गया और कितनी बार जहाँ का तहाँ खड़ा दीख पड़ा। आखिर सिपाहियों ने झल्ला कर उसे मारा और तुरन्त उसके शरीर के टुकड़ों को चिता में जला डाला। उन्होंने राख को बटोर कर एक तालाब में फेंक दिया। लेकिन फकीर फिर पानी पर चलता नजदीक आया और गरज कर बोला "अब तक तुम लोगों ने अपनी सारी ताकत आजमा ली। अब देखो हमारी ताकत।" यह कहकर उसने थोड़ी सी भभूत चारों ओर उड़ा दी। देखते-देखते दुश्मनों के काले-काले पहाड़ कैसे हाथी काले पत्थर की मूर्ति बन गए। घोड़े सफेद पत्थर बन गए। ऊँट गेरू के से लाल पत्थर बनकर खड़े थे। बारह हज़ार पैदल सिपाही कङ्कड़-पत्थर के ढेरों में

सेना में एक भी ज़िन्दा न बचा, तो सारे शहर में शोक छा गया। वह नगर ही अनाथ हो गया। नागवती की बहनें पछाड़ खाने लगी। जहर खाकर प्राण छोड़ने को तैयार हो गई। लेकिन फिर नागवती के बच्चे को कौन पाले-पोसेगा ? इसलिए वे कलेजे पर पत्थर धर कर रह गई और उस लड़के की देखभाल में किसी तरह दिन काटने लगी। नागवती के लड़के का नाम बालचन्द्र था। वह धीरे-धीरे बड़ा होने लगा। पाँचवें साल में आते ही उसका अक्षर अभ्यास पूरा हुआ। लड़के ने एक ही घड़ी में वर्णमाला सीख ली। दूसरी घड़ी में बारहखड़ी पूरी हो गई। थोड़े ही दिनों में बालचन्द्र ने सभी पवित्र ग्रन्थ पढ़ लिए।

उसके बाद उसे अस्त्र-शस्त्र चलाने की शिक्षा देने के लिए तीन आचार्य नियुक्त किए गए। बालचन्द्र ने थोड़ी ही दिनों में कुश्ती लड़ना सीख लिया। तीर और तलवार चलाने में ऐसा होशियार हुआ कि उसका निशाना अचूक प्रसिद्ध हो गया। उसकी वीरता देखकर नगर के सब लोग प्रसन्न होने लगे। बड़े-बूढ़ों ने सिर हिला कर कहा -"यह आगे चलकर अपने बाप-दादों से भी बड़ा प्रतापी होगा।"

बदल गए। तोपें मिट्टी की हाँडियाँ हो गई। सेना के डेरे-तम्बू काँटेदार झाड़ियाँ बन गए। सातों राजा साँप की बाँबियों की तरह खड़े थे। तीनों मन्त्री पत्थर के ढोके बने हुए थे। यों सारी की सारी सेना अचानक जड़ हो गई। पल भर में सब और सन्नाटा छा गया। फकीर ने नागवती के पास लौटकर कहा -"देख ! दुश्मनों का नामो-निशान नहीं रह गया। देख ली न तूने मेरी बहादुरी !" यह कहते हुए उसने उसका हाथ पकड़ना चाहा। लेकिन नागवती ने दूर हटकर कहा -"सावधान ! अगर व्रत पूरा होने से पहले तूने मुझे छुआ, तो तेरा सिर टूक-टूक हो जाएगा।"

श्रीनगर में जब यह खबर पहुँची कि सातों राजाओं और बारह हज़ार

एक दिन की बात है। बालचन्द्र खेल रहा था। इतने में नगर के पुजारी की बहू पानी भरकर घर लौटने लगी। यह देखकर बालचन्द्र को शरारत सूझी। उसने घड़े पर एक तीर छोड़ा। वह तीर खड़े को छेद कर उस औरत के अंगूठे में लगा। खून बहने लगा। तब वह गुस्से से भर कर बोली "कलमुँहा कहीं का ! तेरी माँ वहाँ फकीर के घर में तेरे नाम को रोती है और तू यहाँ गाँव की बहू बेटियों के घड़े फोड़ता फिरता है। अरे ! अपनी यह वीरता उस फकीर पर क्यों नहीं दिखता ?" यह सुनकर लड़का हक्का-बक्का सा खड़ा रह गया। उसके लिए यह एकदम नई बात थी। उसने पुजारी की बहू को डरा धमका कर सारा किस्सा जान लिया। नागवती को कैसे फकीर हर ले गया, कैसे उसके पिता और उनके छहों भाई सेना साथ लेकर उसको छुड़ा लाने के लिए गए और वहाँ फकीर के जादू के बल से पत्थर की मूरतें बन गए यह सब उसको मालूम हो गया। उसने पुजारी की बहू से क्षमा माँगते हुए कहा -"मैं यह सब नहीं जानता था। तुमने आज मेरी आँखें खोल दी। तुम मेरी माता हो। मुझे आशीष दो। मैं फकीर को दण्ड देने जाऊँगा।"

पुजारी की बहू ने आशीष देकर कहा -"बेटा तुम युग युग जीओ और अपनी माँ का उद्धार करो।"

बालचन्द्र वहाँ से सीधे महल में गया। जाकर खाट पर लेटे लेटे सोने लगा। न नहाया न खाया पिया। किसी से कुछ बोला भी नहीं मनो गूँगा हो गया हो। तब उसकी छहों माताएँ आकर गिड़गिड़ाने लगीं -"बेटा ! तुमको क्या हो गया है ? क्या किसी ने कुछ कहा-सूना है ? हमसे क्यों नहीं बोलते हो ?" आखिर बालचन्द्र ने दृढ़ स्वर में पूछा -"बताओ ! मेरे माँ-बाप कहाँ हैं ?" "हम ही तुम्हारी माँ हैं।

तुम्हारे पिता मर गए।" उन्होंने जवाब दिया। "तो क्या मैं समझ लूँ कि मैं तुम सबकी कोख से पैदा हुआ हूँ ? सच बताओ। मेरी माँ कहाँ है ? बताओगी कि नहीं ?" उसने फिर पूछा। "हाय बेटा ! किस चुड़ैल ने यह आग लगाई है ? उसके भी बाल बच्चे होते तो वह यह आग क्यों सुलगाता ?" उन्होंने रोते-पीटते कहा। "क्यों नाहक किसी को दोष लगती हो ? तुम सच कहो। डरने की कोई बात नहीं है।" उसने हठ किया।

आखिर लाचार होकर उन्होंने सारी कथा सुनाई और कहा -"बेटा हमारे बंश में अब तक तुम एक ही बचे हो। इसलिए हमने तुम्हें इतने लाड प्यार से पालकर बड़ा किया है।"

"अच्छा ! तो अब मैं अपनी माँ को छुड़ाने चला। तुम सब मुझे आशीर्वाद दो।"

"हाय बेटा ! तुम वहाँ कैसे जाओगे ? वह भूतहा फकीर जो बारह हज़ार सेना को खो गया, तुम्हें कैसे जीता बचने देगा ? अगर तुम वहाँ जाना ही चाहते हो, तो पहले हम सबको अपने हाथ से जहर दे दो। फिर जहाँ तुम्हारा जी चाहे चले जाना।" उन्होंने रोते हुए कहा।

"माँ ! तुम व्यर्थ अधीर क्यों होती हो ? डरो नहीं। मैं बेले के पौधे लाकर महल के सामने लगा दूँगा। तुम दिन में तीन दफा उन्हें सींचना। जब तक वे पौधे हरे भरे बने रहेंगे, समझना कि मैं सकुशल हूँ। जब वे सुख जाए, तो जान लेना कि मेरी आयु पूरी हो गई।" इस तरह बहुत कुछ कह सुनकर बालचन्द्र ने उनका ढाँढस बँधाया।

बालचन्द्र ने खा पीकर कुछ कलेवा बाँध लिया। तब उसने अपने पिता के सभी आभूषण पहन लिए। कानों में मोतियों की बालियाँ पहनी। हाथों में सोने के कड़े पहने। गले में रत्न की मालाएँ पहनी। अशर्फियों की थैली कमर में कस ली। फिर तलवार लटका कर दुपट्टा कन्धे पर डाल दिया और छहों माताओं के चरण छूकर वहाँ से चल पड़ा।

[संशेष]

एक गाँव में एक गरीब आदमी रहता था। उसका नाम था भोलाराम। वह रोज जङ्गल जाकर लकड़ियाँ तोड़ लाता और गाँव में बेचकर अपनी जीविका चलाता। गरीबों के मददगार की तरह उसके कई बच्चे भी पैदा हो गए थे। वह किसी तरह साग-सत्तू खाकर एक झोपड़ी में बाल-बच्चों के साथ बड़ी मुश्किल से दिन काट रहा था।

इस तरह कुछ दिन बीत गए। एक रोज भोलाराम जङ्गल में लकड़ी काटने गया। वहाँ वह एक पेड़ से लकड़ी काटकर नीचे उतरा कि इतने में उसे पेड़ की जड़ में चींटियों का एक झुण्ड दिखाई दिया। उन सब चींटियों के मुँह में अनाज के दाने थे। यह देखकर भोलाराम को बहुत अचरज हुआ। उसने सोचा - "जो भगवान इस घने जङ्गल में रहने वाली चींटियों को दान देकर पाल-पोस रहा है, वह मेरा पेट क्यों नहीं भरेगा ? आज से मैं काम-धन्धा सब बन्द कर देता हूँ। देखता हूँ कि चींटियों को दान देने वाला भगवान मेरे बाल-बच्चों का पेट भरता है कि नहीं।" यह कहकर वह घर गया और आसन लगाकर चुपचाप बैठ गया। घर में खाने के लिए कुछ न था। खरीदने के लिए पैसा भी न था। उसकी बीवी ने चिल्लाना शुरू कर दिया -"जाकर कहीं से कुछ कमा क्यों नहीं लाते ?" लेकिन भोलाराम टस से मस नहीं हुआ। उसने कहा - "मैं क्यों कमाने जाऊँ ? जो भगवान चींटियों को दान देता है, वह हमें भूखा क्यों रखेगा ?" बेचारी औरत क्या जवाब देती ! लाचार हो वह उस दिन से खुद जङ्गल जाने लगी और जड़ी-बूटियाँ लाकर गाँव में बेचने लगी। यों किसी तरह कुछ दिन बीत गए।

भोलाराम की स्त्री एक दिन इसी तरह जङ्गल में जड़ी-बूटियाँ खोज रही थी कि अचानक उसकी खुरपी किसी कड़ी चीज से

कुमारी वनजा
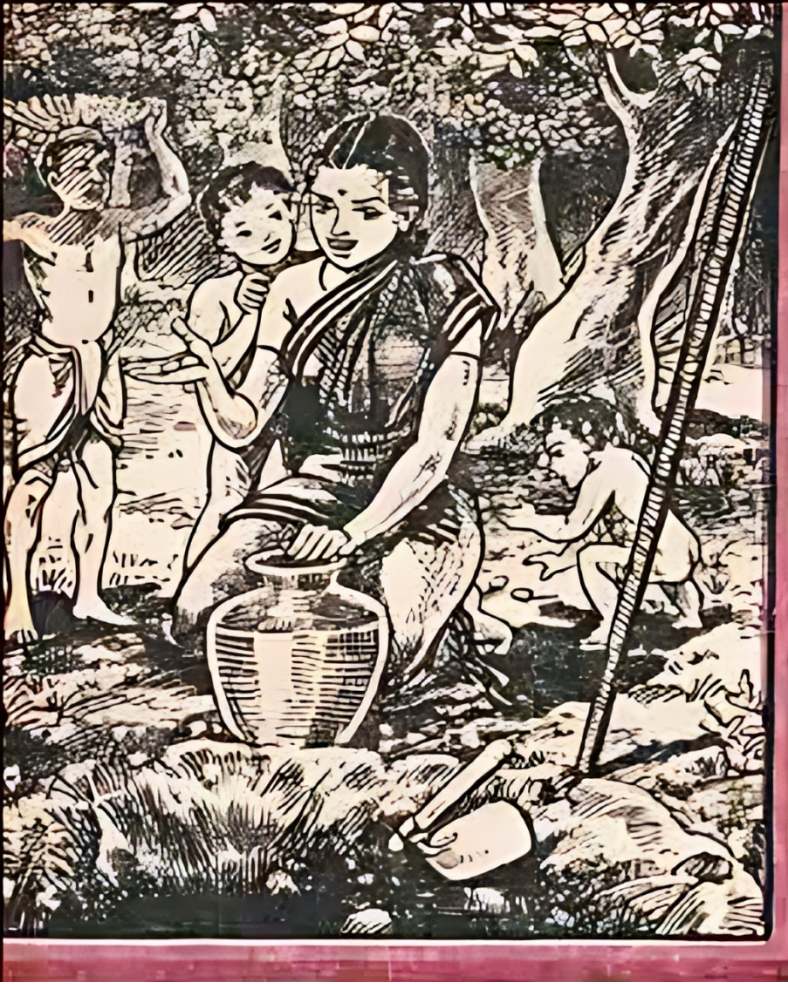
लगी और खनखाना उठी। यह देख बड़ी उतावली से उसने और खोदा। थोड़ी ही देर में एक कलसी निकल आई। उसमें अशर्फियाँ भरी थी। पहले तो उसने उसे जल्दी से उठाकर घर ले जाना चाहा। लेकिन फिर झट से उसे याद आ गया कि दिन में ले जाने से कलसी देखकर लोगों को शक हो जाएगा। बस, सब अशर्फियाँ एक टोकरी में रखकर ऊपर से थोड़ी घास-फूस डालकर उसने उसे कटीली झाड़ियों में ढक दिया और कुछ गोजर-बिच्छू लाकर उसमें छोड़ दिए जिससे किसी को उसमें हाथ लगाने का साहस न हो। फिर वह घर चली गई।

धीरे-धीरे अन्धेरा हो गया और थोड़ी ही देर में रात के दस बज गए। तब भोलाराम की स्त्री ने अपने पति से जाकर कहा -"मुझे जङ्गल में आज एक अशर्फियों से भरी कलसी मिली थी। मैं उन्हें टोकरी में भरकर एक जगह छुपा आई हूँ। चलो, टोकरी उठा लाएँ। कल से हमारी सारी गरीबी दूर हो जाएगी।" लेकिन भोलाराम वहाँ से न हिला न डुला। उसने कहा -"हम बेकार तकलीफ क्यों करें ? चींटियों को दान देने वाला भगवान खुद टोकरी हमारे घर ले आएगा।" उसकी पत्नी बहुत गिड़गिड़ाई। पर वह टस से मस न हुआ।

रात गहरी हो गई थी। कुछ चोर बगल के घर में सेंध डाल रहे थे। इन दोनों की सारी बातचीत सुनकर

उन्होंने सोचा -"वाह ! यह तो अच्छा मौका है। क्यों न जाकर अशर्फियाँ उठा लाएँ ?" यह सोचकर लोभ से लपके हुए हुए जङ्गल में पहुँचे। लेकिन टोकरी में हाथ डालते ही बिच्छुओं ने डङ्क मारा। "ओफ ! ओफ ! इस डायन ने तो हमें भारी चकमा दिया। इसका बदला बदला जरूर लेना चाहिए।" यह सोचकर उन्होंने बड़ी सावधानी से टोकरी उठाई और भोलाराम के घर दौड़े आए। छप्पर पर चढ़कर उन्होंने एक बड़ा सूराख बना दिया। फिर उस छेद में से टोकरी उड़ेल दी। पहले तो टोकरी से जड़ी-बूटियों और गोजर-बिच्छू गिरे। लेकिन फिर झनझन करती अशर्फियाँ आई। यह देखकर पति-पत्नी अचरज से मुँह बाए रह गए। "देखा ! मेरा कहा ठीक निकला कि नहीं ? चींटियों का भगवान अशर्फियाँ उठा लाया कि नहीं ?" यह कहकर भोलाराम उठा और खुशी के मारे नाचने लगा।
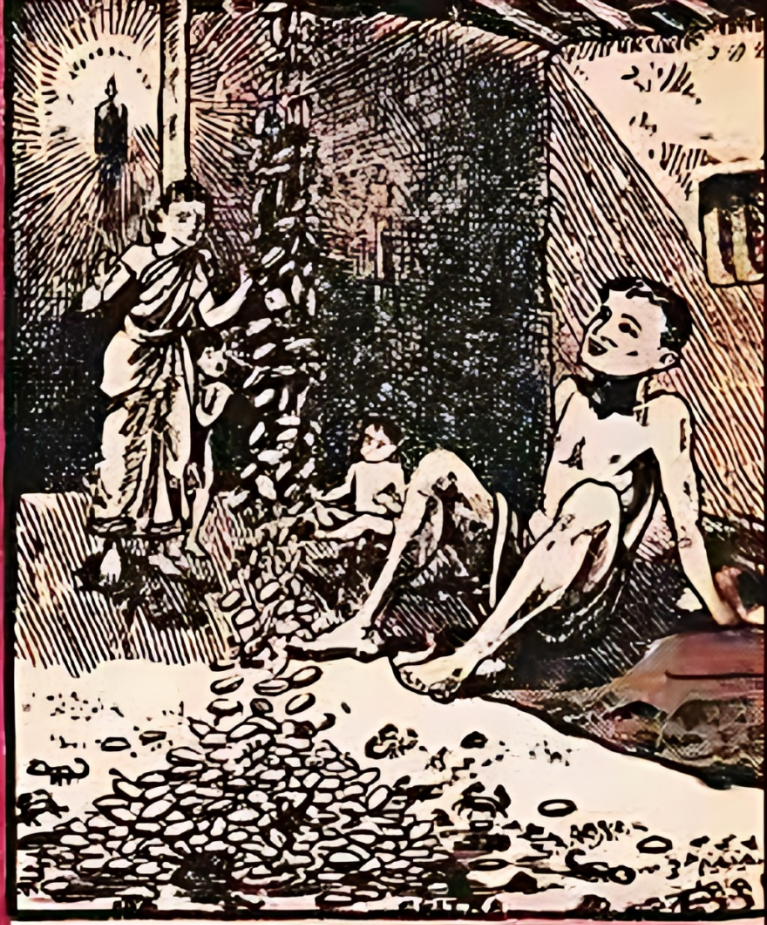
उसके बाद भोलाराम और उसकी बीवी-बच्चे सभी सुख से दिन बीताने लगे। उन्हें अब रुपए पैसे की क्या कमी थी !

बच्चों ! ये कहानी पढ़ कर तुम भी चींटियों को दाना देने वाले भगवान पर भरोसा करके कहीं पढ़ना लिखना न छोड़ देना। कम से कम भूख लगे तो अपनी माँ से खाना जरूर माँग लेना।

विदिशा नगर में एक दिन एक अभागे लड़के की मौत हो गई। उस बच्चे के माँ-बाप और उनके नातेदार उसको ढोकर गाँव के बाहर शमशान में ले गए और उसे वहाँ एक जगह रखकर रोने-पीटने लगे। शाम का वक्त था और थोड़ी ही देर में अन्धेरा होने वाला था।

उसी समय शमशान का ही एक गिद्ध उस जगह आ उतरा और उस लाश को देखकर आँसू बहाने लगा- "हाय ! कैसा सुन्दर लड़का है ! इस जमीन पर बेजान पड़ा देखकर मेरे ही आँसू रोके नहीं रुकते हैं। फिर उनकी क्या हालत होगी जिनकी आँखों का यह तारा रहा होगा। लेकिन रोने पीटने से क्या फायदा ? जो चला गया वह थोड़े ही लौट आएगा ?इसलिए दिल कड़ा करके तुम लोग यहाँ से चले जाओ। शाम हो रही है। यह मरघट गाँव से बहुत दूर है। अन्धेरा होते ही यहाँ भूत, प्रेत पिशाच आदि खुलकर खेलने लगते हैं। वे मर्दों का तो कहना ही क्या, जिन्दों को भी खा जाते हैं।" उस गिद्ध ने बड़ी करुणा दिखाते हुए कहा।

उसकी बातें सुनकर लाश के साथ आए लोगों को डर लगा। वे उस लाश को वहीं छोड़कर लौट जाने लगे।

उनके कदम अभी पीछे मुड़े ही थे कि एक गड्ढे में से एक सियार बाहर निकल आया और उसने सामने आकर बोला -"यह कैसी बात है ! क्या आप लोग अभी से लौट कर चल दिए ? इतनी जल्दी ? अभी तो आपको आए घड़ी भी नहीं बीती। इस चाँद से लड़के को नङ्गी जमीन पर छोड़कर चले जाने को आप लोगों का मन कैसे माना ? आप लोग इतनी जल्दी निराश होकर चले जा रहे हैं। लेकिन आप

लोगों को क्या मालूम कि लड़का फिर नहीं जी उठेगा। घर जाकर करोगे क्या ? यहीं रोना धोना न ? यहीं बैठकर क्यों न रो धो लो ?" उसने कहा।

यह बातें सुनते ही उन लोगों के मन में फिर से आशा जग गई। कौन जाने, शायद लड़का फिर जी उठे ? वे लोग वहीं रुक गए। यह देखकर गिद्ध फिर बोला -"क्या बकता है सियार ? लाश में सडास भी पैदा हो गई और तू कहता है कि लड़का फिर जी उठेगा। भला किसी ने सुना है कि कहीं मुर्दे भी जी उठाते हैं ? इस शमशान में रहते मेरे बाल पक गए हैं। तुम लोग मेरी बात मानोगे कि सियार की ? यह सियार तो कल का बच्चा है। अभी उसके दूध के दाँत भी नहीं टूटे हैं। शमशान में बैठकर रोने पीटने से क्या फायदा है? जाओ! घर जाओ! क्रिया-कर्म करो! ब्राह्मणों को दान दक्षिणा दो तो कुछ पुण्य हो और इस बेचारे की आत्मा को सुख मिले। यहाँ बैठे रहने से क्या फायदा है ? जाओ ! जाओ!" यों उसने उन्हें वहाँ से खदेड़ना चाहा। उसकी बातें सुनकर वे लोग वहाँ से जाने लगे। लेकिन इतने में
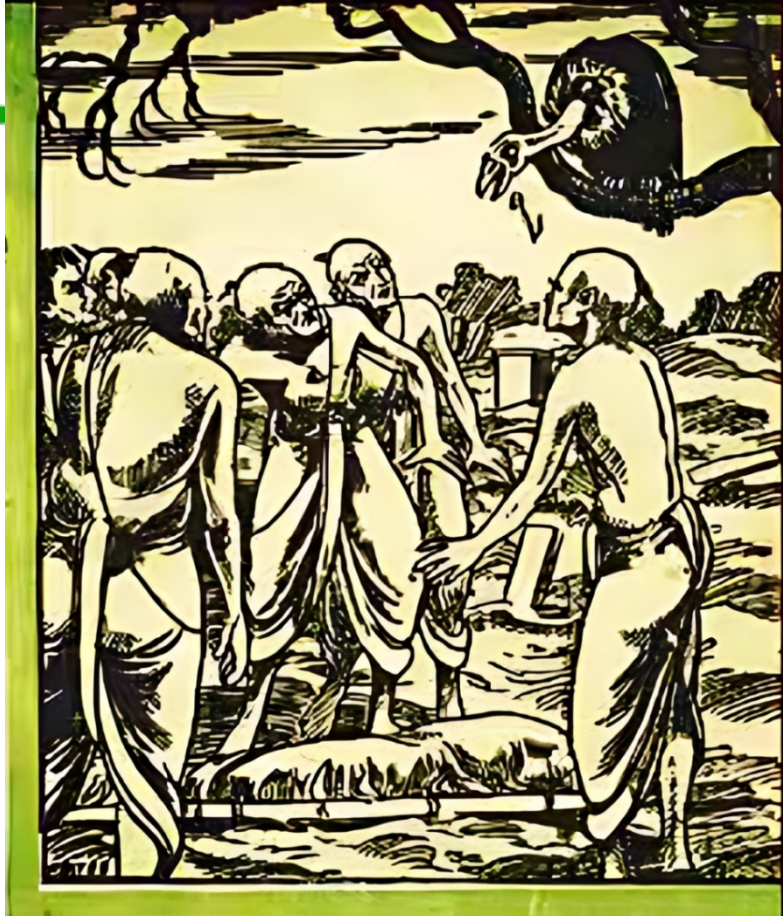
सियार फिर बोला -"गिद्ध की अकल तो सठिया गई है। सिर्फ बाल पकने से ही किसी की बुद्धि भी नहीं पक जाती। आप लोग जरा सोचिए-बिचारिए तो तुरन्त मालूम हो जाएगा कि इसकी बातें झूठी हैं। यह कहता है कि मरे हुए लोग फिर कभी नहीं जी उठते। लेकिन क्या सावित्री का पति सत्यवान मरकर फिर नहीं जी उठा था ? क्या हरिश्चन्द्र की पत्नी शैव्या का बच्चा रोहितास साँप के डस लेने से मरकर फिर नहीं जी उठा था ? कौन जाने, शायद इस तरह यह लड़का भी फिर जी उठे। इसलिए आप लोग और थोड़ी देर तक यहीं रह जाइए। यह गिद्ध आप लोगों को भूत प्रेत

का डर दिखाता है। लेकिन जानिए कि भूत प्रेत साहसी मनुष्य का कुछ नहीं बिगाड़ सकते। अगर आपको डर लगे तो भगवान शङ्कर की प्रार्थना कीजिए। क्योंकि वे सभी भूतों के नाथ हैं। फिर भूत प्रेत तो आपके पास पटकेंगे भी नहीं। वे औढर दानी भी हैं। आपके बच्चे को जिन्दा कर देना उनके लिए कोई बड़ी बात नहीं है।" शोक में डूबे हुए लोगों की बुद्धि काम नहीं करती। लाश के साथ आए हुए लोगों की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या किया जाए। गिद्ध की बात सुनकर वे लोग वहाँ से चले जाने की सोचते। लेकिन सियार की बातें सुन कर फिर रुक जाते। वे लोग यह भी नहीं जान पाए कि दोनों की बातों में कौन सा रहस्य छुपा हुआ है।

वास्तव में उस गिद्ध और सियार दोनों को लड़के के मर जाने का कोई सोच न था। वे झूठ-मूठ के आँसू बहाते हुए बड़ी करुणा दिखा रहे थे। लेकिन दोनों के मन में उस लाश को देखकर खुशी हो रही थी। क्योंकि लाश को नोच खाने से ही गिद्ध और सियार की जीविका चलती है। इसी से वे दोनों लाश को देखते ही वहाँ आकर जमा हो गए थे। लेकिन सियार को देखते ही गिद्ध के मन में लालच पैदा हो गया कि वह किसी न किसी तरह उसे चकमा देकर सारी लाश वही हड़प जाए। इसके लिए यह जरूरी था कि लाश के साथ आए हुए लोग अन्धेरा होने से पहले ही लाश को वहाँ छोड़कर चले जाएँ। क्योंकि गिद्ध को सभी चिड़ियों की तरह दिन भर चार ढूँढ कर अन्धेरा होने से पहले ही घोंसले में पहुँच जाना था। इसीलिए गिद्ध उनको तुरन्त घर जाकर क्रिया-कर्म करने और दान दक्षिणा देने की सलाह दे रहा था।

लेकिन सियार क्या काम चालक था ! वह और भी बड़ी-बड़ी बातें बताने लगा। उसने शास्त्रों और पुराणों का हवाला दिया और उन सबको भगवान शङ्कर की प्रार्थना करने को कहा। बात असल में यह थी कि अन्धेरा हुए बिना सियार को उस लाश पर हाथ साफ करने का मौका नहीं मिल सकता था। अगर रिश्तेदार लोग इसी बीच लाश को वहाँ छोड़कर जाते, तो गिद्ध उसे तुरन्त हड़प जाता और फिर उसके लिए कुछ नहीं बचा रहता। लेकिन अन्धेरा होने तक अगर वह रिश्तेदारों को वहीं रोके रखे, तो फिर गिद्ध को निराश होकर चले जाना पड़ेगाऔर बाज़ी उसी की होगी। कुछ देर बाद रिश्तेदार भी उठकर घर चले जाएँगे। फिर तो उसे मनचाहा मौका मिल जाएगा।

इस तरह गिद्ध और सियार दोनों अपनी अपनी चतुराई दिखाकर किसी न किसी तरह पेट की आग बुझाने का उपाय कर रहे थे। इतने में अन्धेरा होने लगा। लड़के के भाई-बन्धु लाचार होकर सियार के कहे अनुसार करूण स्वर से शिवजी की प्रार्थना करने लगे।

"बन्दे शम्भुम् उमापतिम्, सुरगुरुम्
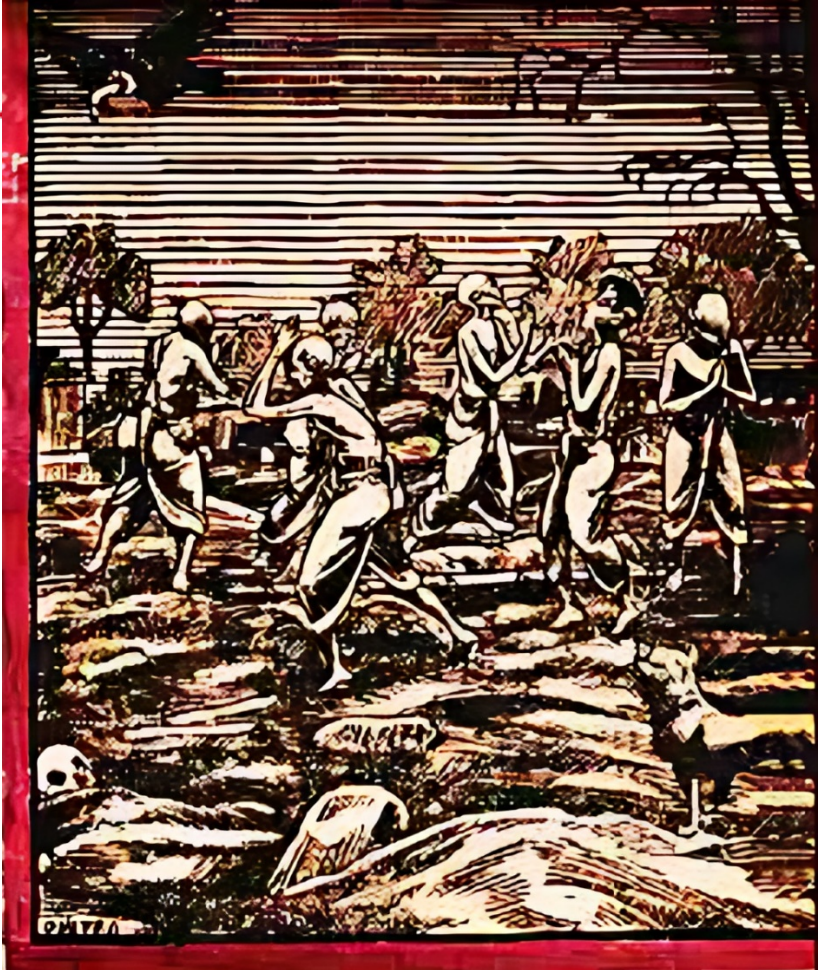
बन्दे जगत्कारणम्, बन्दे पन्नगभूषणम्"

अब गिद्ध पूरी तरह निराश हो गया था। उसने निश्चय कर लिया कि अन्धेरा भी हो चला है और रिश्तेदार लोग यहाँ से टलने वाले नहीं। वह मन ही मन सियार को कोसता हुआ वहाँ से उड़ने की तैयारी करने लगा। लेकिन इतने में अन्धेरा हो जाने के कारण भगवान महादेव अपने भूत प्रेतों के साथ शमशान की सैर करने आए। उन्हें उस लड़के के रिश्तेदारों की प्रार्थना का शोर सुनाई पड़ा। उन्होंने तुरन्त उनके सामने प्रत्यक्ष होकर कहा -"तुम लोग कौन हो और किस लिए मेरी प्रार्थना कर रहे हो ?"

तब उन लोगों ने आनन्द से भरकर अपनी कहानी सुनाई और कहा - "हम पर कृपा करके इस लड़की को जिन्दा करिए।" भगवान ने तथास्तु कह दिया। तुरन्त वह लड़का जमहाई लेता हुआ उठ बैठा जैसे अभी नींद से जागा हो। वह कहने लगा -"अरे ! मैं इस शमशान में कैसे आ गया ?"

गिद्ध ने जाते-जाते यह सब देखा तो वह जहाँ का तहाँ ठिठका रह गया। इधर सियार जो मन ही मन फूला न समा रहा था कि अब समूची लाश उसे ही मिलेगी, लड़के को फिर जी उठते देखकर पत्थर की तरह खड़ा रह गया। अपने मन की जलन निकालने के लिए वह महादेव को कोसने लगा। यह देखकर लड़के के रिश्तेदारों को बहुत अचरज हुआ। उन्होंने कहा -"अरे ! यह कैसी बात है ? तुम्हारी ही सलाह तो थी कि हम भगवान महादेव की प्रार्थना करें। हमारी प्रार्थना सुनकर उन्होंने लड़के को जिन्दा किया। अब तुम उन्हें क्यों कोसने लगे हो ?" तब सियार ने रिरिया कर जवाब दिया -"तुम्हारा लड़का जीता या न जीता। मुझे क्या पड़ी थी ? मैं तो इसलिए खुश हो रहा था कि आज मुझे एक लाश खाने को मिली। लो, इतने में दौड़े आए बड़े देवता कहीं के और लड़के को जिन्दा कर मेरे मुंह का कौर छीन लिया।" यह सुनकर गिद्ध ने नीचे उतरकर सारी राम कहानी सुनाई और कहा -"भगवान ! आपने यह अच्छा ही किया। यह मेरे मुँह का कौर छीनना चाहता था। आपने इसके मुँह का कौर छीन लिया।"

तब भगवान ने सोचा कि यह दोनों बेचारे अपने भूख मिटाने के लिए तो यह सब कर रहे थे। उन्होंने उन पर तरस खाकर ऐसा वर दिया जिससे फिर दोनों को कभी भूख प्यास न सताए। रिश्तेदार लोग भी लड़के को साथ लेकर अपने भाग्य पर फूले हुए घर लौट गए।

एक जङ्गल में एक बाघ-बाघिन और दो खरगोश आस-पड़ोस में रहते थे। ये दोनों जोड़े आपस में बड़े मेल-जोल से रहते थे। इनकी दोस्ती देखकर जङ्गल के सभी जीव अचरज करते थे। क्योंकि जैसा तुम जानते हो, बाघ माँसाहारी जीव है और जङ्गल में उनको देखकर सभी मृग डरते हैं। अगर कोई भूला-भटका जानवर उनके सामने आ गया, तो समझो उसकी मौत ही उसे उधर ले आई। बाघ के सामने होकर कोई भी जानवर जिन्दा नहीं लौट सकता। वह जितना खूँखार है उतना ही फुर्तीला भी। ऐसे बाघ में और खरगोश में गाढ़ी दोस्ती देखकर जङ्गल के जानवरों को अचरज न हो तो क्या हो ? कुछ के मन में तो डाह भी पैदा हो गई थी।

ये दोनों जोड़े दो झोपड़ियों में रहते थे। बरसात का मौसम आता, तो झोपड़ियाँ चूने लगती। इससे इनको बड़ी तकलीफ होती थी। इसलिए इन दोनों ने निश्चय किया कि घास-फूस काट लाएँ और झोपड़ियाँ छा लें। नहीं तो बरसात के दिनों में सोने की जगह भी नहीं रहेगी।

दूसरे दिन बाघ और खरगोश घास-फूस ढूँढने के लिए मुँह-अँधेरे घर से चल दिए।

बाघ को चने का सत्तू बहुत पसन्द था। खरगोश से उसकी गहरी दोस्ती थी ही। इसलिए खरगोश को भी सत्तू पसन्द था। इसलिए जब बाघिन ने सत्तू बाँध दिया तो खरगोश ने भी सत्तू बाँध दिया।

कलेवे की पोटलियाँ कन्धे पर लटकाए लम्बी मूठ वाले हँसिए हाथों में लेकर बाघ

दीनानाथ वर्मा

और खरगोश साहब एक अच्छी साइत में घास काटने चले। शाम तक मेहनत करके घास के दो बड़े-बड़े गठ्ठे सर पर रखकर वे दोनों घर लौट आए।

इस तरह दो-तीन दिन बीत गए। लेकिन बड़ों ने कहा है न -"सबै दिन जात न एक समान।" यहाँ भी वही हाल हुआ। एक दिन बाघ और बाघिन में झगड़ा हो गया। बाघिन को अपने पति पर बड़ा गुस्सा आया। उसने तैश में आकर कहा - "अगर मैंने तुमको भूखों न मार दिया तो मेरा नाम न लेना।" जब घरवाली रूठ जाए तो पति महाशय भूखा न मारे तो क्या करें ? बच्चों ! जानते हो बाघिन ने दूसरे दिन क्या किया ? उसने कलेवे की पोटली में तीन-चार पत्थर बाँध दिए और बड़े प्रेम से पति के हाथ में पोटली थमा दी। वह बेचारा क्या जाने कि उसकी पोटली में कलेवा नहीं बल्कि पत्थर बँधे हुए थे। उसे अपनी घरवाली की प्रतिज्ञा बिल्कुल याद न थी। उस बेचारे को तो खुशी हो रही थी कि बीवी से उसकी सूलह हो गई । नहीं तो वह सवेरे उठकर कलेवा बनाकर उसके हाथ क्यों दे देती ? इसलिए बाघ ने सोचा कि उसकी बीवी ने कल के झगड़े की बात मन से बिल्कुल भुला दी है। उसने सोचा -"वाह ! इसका दिल कैसा साफ है।" वह खुशी-खुशी जङ्गल की तरफ चला गया।

बड़ी तेज धूप थी। दोपहर होते-होते बाघ के पेट में चूहे दौड़ने लगे। बेचारा कलेवे की पोटली लेकर एक पेड़ की छाँव में खाने बैठा। पोटली खोली तो मुँह बाए खड़ा रह गया। वह अब क्या करे ? भूख के

मारे बेहाल था। खरगोश का कहीं पता न था। बस, उसने झट खरगोश की पोटली खोली। खाने की चीज निकाल कर पत्थर उसमें रख दिए। फिर थोड़ी दूर जाकर बैठ गया जैसे वह कुछ भी जानता ही न हो।

थोड़ी देर बाद थका-माँदा भूखा-प्यासा खरगोश कलेवा करने आया। बेचारे ने जल्दी-जल्दी पोटली खोली।

लेकिन टोटली में पत्थरों के सिवा और कुछ न था। खरगोश ने नजदीक के एक तालाब में जाकर पानी पीकर प्यास बुझाई। बेचारे की निराशा का ठिकाना न रहा। सवेरे से उसने कुछ खाया पिया न था। भूख बड़े जोर से लग रही थी। अन्तड़ियाँ कुलबुला रही थी। तिस पर आज उसने मेहनत भी खूब की थी। लपका लपका खाने के लिए आया। लेकिन कलेवे के भले बदले पत्थर ! यह कैसे मुमकिन हुआ ? शायद उसकी स्त्री की भूल हो। लेकिन उसकी स्त्री ने तो कभी ऐसा न किया था। वास्तव में इसकी जैसी अच्छी स्त्री कहीं न थी। फिर यह कैसे हुआ ? क्या किसी ने कलेवा चुरा कर

उसके बदले पत्थर रख दिए ? लेकिन नजदीक में उसके प्यारे दोस्त बाघ के सिवा और कोई न था। बाघ तो ऐसा कभी न करेगा। शायद उसकी बीवी ने मजाक के तौर पर ऐसा किया। लेकिन ऐसा मजाक तो ठीक नहीं ! इस तरह खरगोश इस सोच में पड़ गया कि पोटली में कलेवे के बदले बदले पत्थर कहाँ से आ गए।

जब साँझ हुई तो गुस्से से भरा खरगोश घर लौटा। दरवाजे पर पाँव धरते ही उसने पत्नी को बुलाकर पूछा - "क्यों री ! क्या

तेरी अकल मारी गई जो तू ने कलेवे की पोटली में पत्थर बाँध दिए थे। तू ने सोचा नहीं कि मैं खाऊँगा क्या ? निगोड़ी कहीं की। यह भी कोई दिल्लगी है ! याद रख ! ऐसा फिर कभी किया तो तेरी हड्डी पसली चूर-चूर कर दूँगा। उसने दाँत पीस कर कहा। ख़रगोशिन को जैसे काठ मार दिया हो ! "दैया रे दैया ! कहते क्या हो ? पत्थर बाँध दिए !मैंने तो पोटली में रोज की तरह सत्तू बाँध दिया था। उस में पत्थर कहाँ से आ गए ? यह भी कभी हो सकता है ?" उसने खिसिया कर कहा। आखिर दोनों में सुलह हुई और खा पी कर दोनों सो गए।

दूसरे दिन भी ऐसा ही हुआ। बाघिन ने फिर पत्थर बाँध दिए। लेकिन बाघ की क्या मजाल थी कि जो पत्नी से कुछ कहे ! उसने उस दिन भी अपने दोस्त की पोटली साफ कर दी। भोला भाला खरगोश शाम को फिर ख़रगोशिन पर बिगड़ा। उसे घर से निकल जाने को कहा। आखिर ख़रगोशिन ने बड़ी-बड़ी कसमें खाकर अपने पति से कहा -"सुनो तो। जान पड़ता है कोई बदमाश यह शरारत कर रहा है। अगर विश्वास न हो, तो कल दोपहर को छुप कर देख लेना। फिर आसानी से चोर पकड़ा जाएगा। तब उसकी खूब खबर लेना। बेकार मुझ पर क्यों बिगड़ते हो ?" खरगोश को यह बात जञ्च गई। दूसरे दिन ख़रगोशिन ने कलेवा की पोटली उसकी आंखों के सामने बाँधी।

उस दिन खरगोश का सारा ध्यान उस पोटली पर लगा रहा। काम करने में मन न

लगा। वह किसी न किसी तरह चोर को पकड़ना चाहता था। उसने पोटली रोज की तरह एक जगह रख दी और काम का बहाना करके चला गया। जब दोपहर हुई तो नजदीक की झाड़ी में छिप कर देखने लगा। थोड़ी देर में बाघ आया और उसकी पोटली खोल कर जल्दी-जल्दी खाने लगा। तब खरगोश को समझ में आ गया कि उसकी पोटली में से कलेवा रोज कैसे गायब हो जाता था। उसने सोचा -"तो यह सब मेरे दोस्त की करामात थी और मैं बेकार अपनी स्त्री पर बिगड़ रहा था।"

बाघ पोटली साफ करके चला गया। खरगोश चुपचाप देखता रहा। उस दिन भी वह तालाब का पानी पीकर रह गया। शाम को दोनों मित्र घर लौटने की तैयारी करने लगे। आज खरगोश ने जरा बड़ा गट्ठा बाँधा। दोनों अपना-अपना गट्ठा उठने लगे। इतने में बाघ ने पूछा -"क्यों दोस्त ! आज तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं मालूम होती है। क्या गट्ठा तुमसे उठ नहीं रहा है ?"

"क्या कहूँ भाई ! बुखार चढ़ गया है। इसी से सच में पड़ा हूँ कि घर कैसे पहुँचूँ।" खरगोश ने कहा।

बाघ को उसे पर तरस आ गया। उसने कहा -"अच्छा ! तो तुम अपना गट्ठा भी मेरी पीठ पर लाद दो और उस पर तुम भी बैठ जाओ। मैं आसानी से तुमको घर पहुँचा दूँगा।"

"भाई ! सचमुच तुम्हारे जैसा दोस्त मिलना मुश्किल है। सच्चा दोस्त सिर्फ तुम ही को कह सकते हैं। मैं तुम्हारा एहसान तो जन्म जन्म में न भूल सकूँगा।" खरगोश

ने जवाब दिया। उसने हाँफ़ते-कराहते अपना गठ्ठा बाघ की पीठ पर रख दिया और खुद उसे पर आराम से बैठ गया।

धीरे-धीरे हुए दोनों गाँव के नजदीक पहुँचे। वहीँ पास में एक मरघट था। उसे समय वहाँ पर एक चिता जल रही थी। खरगोश चुपके से बाघ की पीठ पर से उतर गया और उस चिता में से एक जलती हुई लकड़ी उठा लाया। उसने उससे बाघ की पीठ पर रखी हुई घास में आग लगा दी। सूखी घास फुस थी। आग बड़ी जल्दी भभक उठी। उस बाघ बेचारे का सारा शरीर जल गया। गठ्ठे उसकी पीठ पर मजबूती से बँधे हुए थे। इसलिए वह उन्हें गिरा भी न सकता था। तब खरगोश ने ब्यङ्ग से कहा -"बाघ भैया ! अब तो कभी अपने दोस्तों को धोखा न दोगे ? मेरी बात याद रखोगे न ?" यह कहकर वह नौ दो ग्यारह हो गया। बच्चों ! मैं तुमसे एक बात कहना भूल ही गया। पहले बाघ के बदन पर धारियाँ नहीं होती थी। जब उसने चोरी की और अपने दोस्त को धोखा दिया, तो उसे उसका फल भुगतना पड़ा। उसके बदन पर जहाँ-जहाँ जलती हुई घास चिपकी रही, वहाँ वहाँ उसका शरीर जल गया। कुछ दिनों के बाद घाव तो अच्छे हो गए। लेकिन दाग रह गए। बाघ के बदन पर वह धारियाँ नहीं बल्कि उसके कलङ्क की कालिमा है।

एक आदमी के पाप से सारी जाति का नाश हो जाता है। इस तरह एक बाघ के कलङ्क की कालिमा सभी बाघों के शरीर पर प्रकट हो गई। अगर वह धब्बे न होते तो बाघ का बदन कैसा सुनहरा और सुन्दर होता। सोचो तो !

इसीलिए पशु हो या मनुष्य, हर एक कोई यह कोशिश करनी चाहिए कि उस पर कोई कलङ्क न लगने पाए। एक बार कलङ्क लगने पर फिर उसको धो डालना मुश्किल हो जाता है।

किसी जमाने में एक बिल्ली रहती थी। एक तोताराम से उसकी बड़ी दोस्ती थी। एक दिन बिल्ली ने अपने दोस्त तोताराम को दावत के लिए बुलाया। लेकिन वह थी बड़ी कञ्जूस। इसलिए उसने तोते को सिर्फ थोड़ा सा सत्तू और पतला सा पानी मिला हुआ दूध दिया। बेचारा तोताराम बड़ा शरीफ था। इसलिए वह कुछ भी नहीं कह सका।

कुछ दिन बाद तोते की बारी आई। तब उसने बड़ी धूमधाम के साथ इस दावत की तैयारी की। उसने पाँच सौ लड्डू, एक हज़ार रोटियाँ और पाँच घड़ों में भरकर खीर तैयार की। फिर बिल्ली को बुला लाया।

खीर देखते ही बिल्ली फूली न समायी। उसके मुँह से लार टपकने लगी। तोते ने अपने लिए दो लड्डू अलग रख लिए और बाकी सभी चीज बिल्ली के सामने रख दी। बिल्ली दोनों हाथों लड्डू उठाकर मुँह में ठूँसने लगी। एक-एक लड्डू उसके लिए एक-एक कौर बन जाता था। चबाने के लिए समय ही कहाँ था! बस जल्दी-जल्दी निगलती जाती थी । इस तरह एक-एक कर सब लड्डू खत्म हो गए। रोटियाँ भी गायब हो गई और खीर के घड़े भी खाली हो गए।

"पेट तो भरा नहीं। क्या और कुछ बचा है ?" बिल्ली होंठ चाटती हुई बोली।

तोते ने दोनों लड्डू, जो अपने लिए बचा कर रखे थे, लाकर बिल्ली की थाली में डाल दिए और बोला -"बस, इन दोनों लड्डूओं के सिवा और कुछ नहीं बचा है।"

बिल्ली ने दोनों लड्डू एक ही बार मुँह में ठूँस लिए और एक ही कौर में निगल कर बोली -"लेकिन मेरा पेट तो भरा नहीं। क्या खाने के लिए और कुछ नहीं बचा है ?"

तोते ने झुँझला कर कहा - "जो कुछ था सो सब तुम ही निगल गई। अब और

गोकुलचन्द

क्या बचा है ? हाँ, सिर्फ मैं बच गया हूँ। चाहे तो मुझे भी निगल जाओ।"

तोते के यह कहने की देरी थी कि बिल्ली उस पर झपट पड़ी और उसको पकड़ कर झट से निगल गई। फिर बाहर निकल कर सड़क पर आ गई। वहाँ एक बुढ़िया खड़ी-खड़ी उस बिल्ली के काले कारनामें अपनी आँखों से देख रही थी। उसने बिल्ली को रोक कर कहा -"निगोड़ी कहीं की ! क्या तुझे इतना भी न सूझा कि वह तुम्हारा दोस्त था ?"

"चली है बड़ा उपदेश देने। देख, अभी तेरी क्या गत बनाती हूँ।" यह कहकर बिल्ली ने बुढ़िया को भी पकड़ लिया और झट से मुँह में डालकर निगल गई।

वह फिर खुशी-खुशी आगे बड़ी तो उसे एक धोबी एक गधे को हाँकता हुआ मिला।

"क्यों री बिल्ली ! अन्धी है क्या ? गधे की टाँग के नीचे पढ़कर दब जाएगी तो बस भुर्ता ही निकल जाएगा। हट जा, हट जा, सामने से।" धोबी ने कहा।

"वाह ! अरे वाह ! आँखें सिर पर चढ़ आई है क्या ? क्या समझ रखा है तूने मुझे ? पाँच सौ लड्डू और हज़ार रोटियाँ चट कर गई। पाँच घड़े खीर एक घूँट में पी गई। तोताराम को निगल गई। एक बुढ़िया ने टोका तो उसको हड़प कर गई। तू कहाँ से आया है मुझे आँख दिखाने ? देख, अभी तेरा क्या हाल करती हूँ।" यह कहकर बिल्ली गधे और

धोबी दोनों को पलक झपकते हड़प गई और फिर आगे बढ़ चली।।

थोड़ी दूर पर बिल्ली को एक जुलूस सा आता दिखाई दिया। कल ही वहाँ के राजकुमार की शादी हुई थी। इसलिए बड़ी धूमधाम से जुलूस निकल रहा था। आगे आगे बाजे-गाजे वाले चल रहे थे। उनके पीछे सारे दरबारी लोग कतार में चल रहे थे। सब के पीछे सौ हाथी झूमते चले आ रहे थे। बिल्ली सीधे उस जुलूस के सामने से जाने लगी।

"क्यों री बिल्ली ! तेरी आँखें आसमान पर चढ़ गई है ? हाथी के पैरों तले पड़ जाएगी तो चटनी बन जाएगी। हट जा, हट जा, नहीं तो नाहक जान गवाँएगी।" किसी दरबारी ने कहा।

"अच्छा ! देखूँ, किसकी चटनी बनती है। क्या समझ रखा है तू ने मुझे ? पाँच सौ लड्डू और हज़ार रोटियाँ चट कर गई। पाँच घड़े खीर एक घूँट में पी गई। अपने दोस्त तोते को निगल गई। एक बुढ़िया ने टोका तो उसे भी हड़प कर गई। बेवकूफ धोबी जो सामने आया तो उसे और उसके गधे को भी निगल गई। क्या तू समझता है कि मैं तेरे राजा रानी, उनके बाजे वालों और हाथियों की कोई परवाह करती हूँ ? देख ले अभी।" यह कहकर बिल्ली सारे जुलूस को मय हाथियों की निगल गई और आगे बढ़ी।

अब तक बिल्ली का पेट भर गया था। लेकिन उसे ऐसा मालूम होता था मानो उसके भोजन में कोई कमी रह गई है। थोड़ी देर बाद बिल्ली को याद आया कि आज सवेरे से उसने एक भी चूहा नहीं खाया है। उसने सोचा -"ओह ! तो यह बात है ?"

वह मन ही मन यह सब सोच रही थी कि एक चूहा उसके सामने आकर खड़ा हो गया और बड़ी शान के साथ बोलने लगा -"ऐ बिल्ली ! हट जा ! हट जा मेरे सामने से। क्या तेरी शामत आ गई जो इस तरह मेरी राह रोक कर खड़ी हो गई है ?" बिल्ली फूली न समायी। उसे मुँह माँगी मुराद मिल गई। उसने पलक झपकते ही चूहे को पकड़ा और मुँह में डालकर बिना चबाए निगल गई। यह तो ऊँट के मुँह में जीरे का फोरन था।

बिल्ली के पेट के अन्दर बड़ा अन्धेरा था। हाथ को हाथ न सूझता था। लेकिन आखिर वह चूहा था न। इस अँधेरे में उसने लड्डुओं, तोता, बुढ़िया, धोबी, गधे, राजा-रानी, दरबारी, बाजे वालों और हाथियों सबको देख लिया। इन सब से बिल्ली का पेट खचाखच भरा मालूम हो रहा था। वहाँ हवा की कमी से उसका दम घुटा जा रहा था। फिर वह वहाँ कैसे रुकता ? उसने अपने पैने दाँतों से बिल्ली के पेट में एक बड़ा छेद कर दिया और बाहर निकल आया। उसी के पीछे-पीछे चोञ्च में दो लड्डू दबाए तोताराम भी बाहर आ गया। तोते के पीछे-पीछे बुढ़िया, उसके पीछे धोबी, उसके पीछे गधा और उसके पीछे राजा और रानी का सारा जुलूस बाहर निकल आया।

और बेचारी बिल्ली क्या करती ? अपना पेट सिलवाने के लिए वह किसी दरजी को ढूँढ़ने चली गई।

बीते युग की बात है। एक नगर में एक व्यापारी रहता था। उसके इकलौते बेटे का नाम था प्रभाकर। व्यापारी के पास दो बड़े जहाज थे। उन्हीं के जरिए व्यापार करके उसने लाखों कमाए।

एक बार व्यापारी के दोनों जहाज माल लाद कर विदेश गए। लेकिन बहुत दिन जाने पर भी जब जहाज नहीं लौटे, तब उसके मन में गहरी चिन्ता पैदा हुई। वह बहुत अधीरता से उनकी राह देखने लगा। आखिर उसे खबर लगी कि उसके जहाज तूफान में डूब गए। व्यापारी के सिर पर मानो बिजली गिरी। वह माथा पकड़ कर जमीन पर बैठ गया।

कुछ देर बाद उसने सिर उठाया तो देखा कि एक बौना उसके सामने खड़ा ठठा कर हँस कर कह रहा है -"सेठ जी ! बेकार सोच क्यों करते हो ? अब रोने-पीटने से क्या होने वाला है ? फिर भी अगर तुम एक वचन दो तो मैं तुम्हारी मदद कर दूँ। आज शाम को घर लौटते ही सबसे पहले जिस चीज पर तुम्हारी नजर पड़े, वह मुझे दे दो। अगर तुम मुझे यह वचन दो तो मैं तुम्हारी खोई हुई दौलत फिर तुम्हें वापस दिला सकता हूँ। जो चीज मुझे देनी पड़ेगी वह बारह साल के अन्दर जब तुम्हारा मन चाहे दे सकते हो।"

यह सुनकर व्यापारी ने अपने मन में सोचा -"मेरे घर लौटने पर सबसे पहले जो दौड़कर मेरे पैरों में चिपक जाता है, वह है मेरा कुत्ता। इसलिए सारी दौलत के बदले बौने को एक कुत्ता देकर मैं छुटकारा पा सकता हूँ। यह सोचकर उसने बौने की शर्त मञ्जूर कर ली। बौना जैसे आया था, वैसे ही गायब हो गया।

व्यापारी शाम को घर लौटा। चौखट पर पाँव रख ही रहा था कि उसका लाडला

श्रीनिवास शर्मा
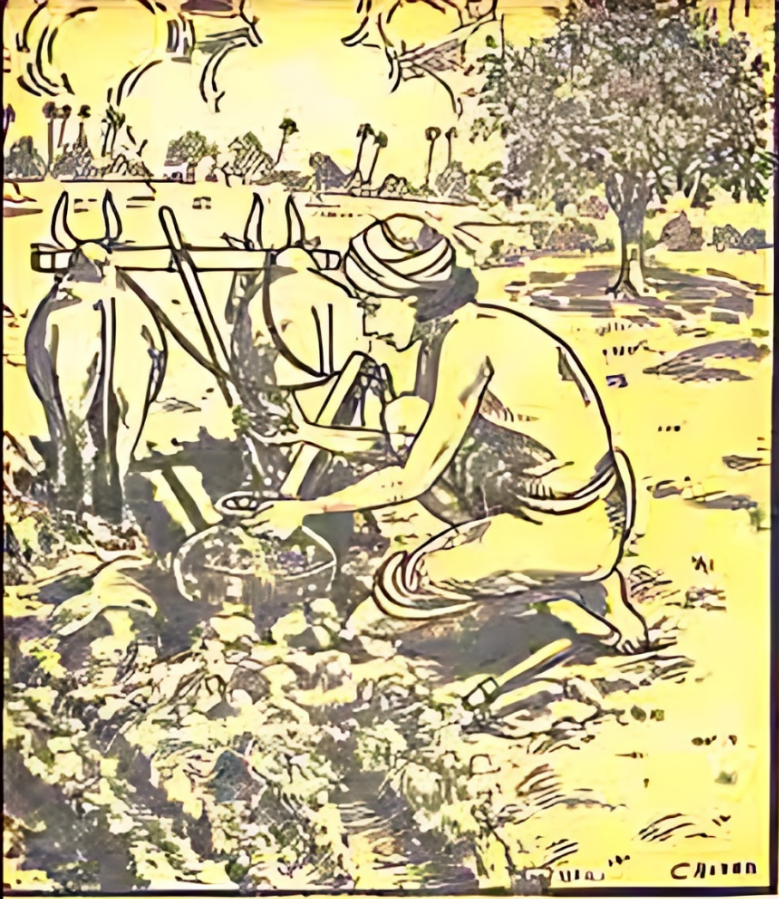
लड़का प्रभाकर दौड़कर उसे चिपट गया। यह देखकर व्यापारी को एक बड़ा धक्का लगा। लेकिन बेचारा करता क्या ? बात जो हार चुका था। आखिर उसने यह सोचकर सन्तोष कर लिया कि उसके लिए अभी बारह वर्ष का समय है। एक दिन व्यापारी खेत जोतवा रहा था कि उसके हल की फाल किसी कड़ी चीज से टकराई। वहाँ खोदने पर उसे अशर्फियों से भरा हुआ एक घड़ा मिला। व्यापारी ने समझा कि यह इस बौने का प्रभाव है। उस पूञ्जी से व्यापार करके एक दो बरस में वह फिर लखपति बन गया।

देखते-देखते बारह बरस बीत गए। बौने की दी हुई अवधि पूरी हो गई। तब व्यापारी ने अपने लड़के प्रभाकर को बुलाकर सारा किस्सा कह सुनाया। सुनकर प्रभाकर ने कहा -"अच्छा ! देखूँगा कि यह बौना हमारा क्या बिगाड़ सकता है। बच्चे को ऐसा चपेटूँगा कि छठी का दूध याद आ जाएगा। आप कुछ फिक्र न कीजिए।" थोड़ी देर में बौना आ ही गया। उसने व्यापारी से कहा -"क्यों सेठ जी ! तुमने मुझे जो वचन दिया था वह पूरा करोगे कि नहीं ?" उसका इतना कहना था कि प्रभाकर उसे पर टूट पड़ा और उसे मारपीट कर भगाने की कोशिश करने लगा।

लेकिन वह कोई मामूली बौना नहीं था। वह पल भर में प्रभाकर को कैद करके ले गया। प्रभाकर की गुस्ताखी की सजा देने के लिए उसने उसे एक छोटी सी नाव पर चढ़ाकर समुद्र में छोड़ दिया। प्रभाकर की नाव बहते-बहते एक सुनसान किनारे से जा लगी। वह नाव से उतरकर जब थोड़ी दूर चला तो उसे

एक सोने के पहाड़ पर एक सोने का किला दिखाई दिया। उस किले में दैत्य लोग रहते थे।

प्रभाकर किले में घुसा और वहाँ एक महल देखकर उसमें चला गया। एक कमरे में उसे काला साँप दिखाई दिया। उस साँप ने उससे कहा -"डरो मत ! मैं एक देव कन्या हूँ। दैत्य लोग मुझे उठा कर ले आए और मुझे काला साँप बना दिया। अगर तुम एक उपाय करो तो मुझे इस शाप से छुटकारा मिल सकता है। तुम्हारे इस उपकार के लिए मैं जन्म भर तुम्हारी दासी बनी रहूँगी और किसी न किसी तरह इस उपकार का बदला जरूर चुका दूँगी। प्रभाकर ने उसकी बात मञ्जूर कर ली। तब उसने कहा - "प्रभाकर ! आधी रात होते ही काले बौने दैत्य तुम्हें खोजते हुए आएँगे और पूछेंगे -'तुम यहाँ क्यों आए ?' तब तुम कहना -'मैं देव कन्या को लेने आया हूँ।' फिर वे पूछेंगे -'क्या तुम उसके लिए अपनी जान देने को तैयार हो ?' तब तुम 'हां' कर देना। तुरन्त वे तुम्हारी जान ले लेंगे। परन्तु डरने की कोई बात नहीं। तुम्हारे मरते ही मैं इस जादू से छूट जाऊँगी और फिर तुम्हें जिन्दा कर दूँगी। देव कन्या ने जैसा कहा वैसा ही हुआ। आखिर देवकन्या ने अपना असली रूप धारण करके प्रभाकर को जिन्दा कर दिया। इस तरह बौनों से उनका पिण्ड छूट गया।

तब प्रभाकर ने उस देव-कन्या से शादी कर ली और दोनों उसी पहाड़ पर, उसी किले में रहने लगे। कुछ ही दिनों में उनका एक सुन्दर लड़का पैदा हुआ।

दो साल बाद प्रभाकर ने अपनी स्त्री से कहा -"मैं एक बार अपने माँ-बाप को

देख आना चाहता हूँ।" लेकिन उसने कबूल न किया। पर प्रभाकर के बहुत हठ करने पर उसने कहा - "अच्छा तो जाओ। मैं एक अँगूठी देती हूँ। उसे उँगली में पहन लो। उसके प्रभाव से ज्यों ही तो मुझे याद करोगे, मैं तुम्हारे आगे आ खड़ी हूँगी। लेकिन याद रखो, अपने पिता के सामने मुझे कभी याद न करना।" यह कहकर उसने एक अँगूठी अपने पति की उँगली में पहना दी।

प्रभाकर ने यह अँगूठी पहन कर आँखें मूँद ली और कहा -"मैं अपने पिता के पास जाना चाहता हूँ।" उसने आँख खोली तो अपने को पिता के घर में खड़ा पाया। लेकिन उसे अपना घर छोड़े बहुत दिन हो गए थे। उसका रूप भी बिल्कुल बदल गया था। इसलिए उसके माता-पिता उसे पहचाना नहीं सके। यह देखकर प्रभाकर को बड़ा दुख हुआ। उसने शुरू से अपनी सारी कहानी उन्हें सुनाई। तो भी उन्हें उस पर विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने समझा कि यह कोई धोखेबाज है। प्रभाकर ने बहुत सी निशानियाँ दिखाई। तो भी उन्हें उसे पर विश्वास न हुआ।

आखिर प्रभाकर को गुस्सा आ गया। उसने साबित करना चाहा कि वह झूठा नहीं है। इसलिए उसने मन में अपनी स्त्री को याद किया। तुरन्त वह बेटे को अपनी गोद में लिये आ खड़ी हुई। अब प्रभाकर के माँ-बाप को विश्वास हुआ। वह बहू और पौते को देखकर बहुत खुश हुए। लेकिन देव-कन्या को मन ही मन अपने पति पर बड़ा गुस्सा आ रहा था। वह सोच रही थी कि उसने अपना वचन तोड़ डाला।

एक दिन पति-पत्नी दोनों नदी के किनारे टहल रहे थे। इतने में प्रभाकर को नींद आ गई और वह एक पेड़ के नीचे सो गया। बस, देव-कन्या को मौका मिला। उसने पति के हाथ से अँगूठी निकाल ली और अपने बेटे को लेकर एक क्षण में फिर अपने सोने के किले में लौट गई।

थोड़ी देर बाद प्रभाकर की नींद खुली तो उसे सारा हाल मालूम हुआ। लेकिन अब वह क्या कर सकता था ? घूमते फिरते वहाँ से चलकर एक पहाड़ के पास पहुँचा। वहाँ तीन दैत्य आपस में झगड़ रहे थे। प्रभाकर को देखते ही तीनों ने उसे बुलाया और फैसला करने को कहा। प्रभाकर पञ्च बना। तब वे कहने लगे -"देखो भाई ! हमारे पास एक जोड़ी खड़ाऊ है। इसको पहनकर आदमी जहाँ चाहे वहाँ जा सकता है। मोतियों की एक माला है। इसको गले में डाल लेने से आदमी जिस चीज की इच्छा करे, वह उसे तुरन्त मिल सकती है। एक तलवार है। वह ऐसी है जिसके बल से सारे संसार को जीता जा सकता

है। हम तीनों इन चीजों को आपस में बाँट लेना चाहते हैं। अब तुम फैसला करो कि किसको कौन सी चीज मिले।" उन्होंने कहा।

प्रभाकर ने कहा -"ठीक है। मैं फैसला तो कर सकता हूँ। लेकिन मुझे कैसे मालूम हो कि इन चीजों में वह सब गुण है। इसलिए मैं एक बार इनकी जाञ्च करना चाहता हूँ। तीनों दैत्य राजी हो गए। प्रभाकर ने पहले वह माला गले में डाल ली। फिर तलवार हाथ में पकड़ी और खड़ाऊ पहनकर उसने मन

ही मन कहा -"मैं सोने के किले में पहुँच जाऊँ।" बस, पलक झपकते ही सोने के किले में पहुँच गया।

वहाँ पहुँचकर उसने देखा कि बड़ी धूमधाम से किसी के स्वयंवर की तैयारी हो रही है। पूछने पर पता चला कि यह उसी देव-कन्या का स्वयंवर है। इसलिए देश-विदेश के राजा आए हुए थे। प्रभाकर तुरन्त देव-कन्या के सामने जा खड़ा हुआ। अपने पति को आया देखकर वह अबाक रह गई। फिर दोनों हाथों से आँखें मूँद कर रोने लगी। प्रभाकर ने तब उसको धीरज देते हुए कहा -"रो मत ! मैं तुमसे कुछ नहीं कहता। मेरे पिता ने बौने को वचन देकर तोड़ा क्योंकि उन्हें मुझसे बड़ा प्रेम था। मैंने भी तुम्हें वचन देकर तोड़ा क्योंकि मुझे अपने माँ-बाप से बड़ा प्रेम था। लेकिन तुमने अपना वचन क्यों तोड़ा यह मेरी समझ में नहीं आया।"

तब देवकन्या ने अपनी गलती महसूस की और सिर झुका कर माफी माँगी। तुरन्त स्वयंवर रुक गया और सभी राजकुमार हताश होकर अपने देश लौट गए।

उस दिन से प्रभाकर और देव-कन्या उस सोने के किले में बड़े सुख से रहने लगे।

बहुत से लोग वचन देकर यूँ ही तोड़ देते हैं। लेकिन यह बड़ी भूल है। क्योंकि "आदमी के गात में बात ही करामात है"। बच्चों ! देखा तुमने ! वचन तोड़ने से व्यापारी को, प्रभाकर को, देवकन्या को कितने कष्ट भोगने पड़े ?

गैंडा